मेरी भावना

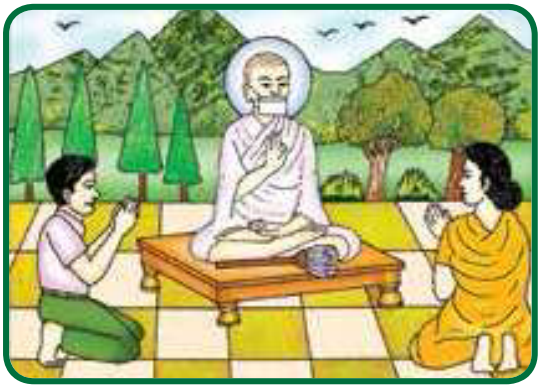

जिस ने राग द्वेष कामादि जीते सब जब जान लिया।
सब जीवों को मोक्ष मार्ग का, निस्पृह को उपदेश दिया ॥
बुद्ध, वीर, जिन हरिहर, ब्रह्मा या उसको स्वाधीन कहो।
भक्ति भाव से प्रेरित हो, यह चित्त उसी में लीन रहो ॥

कोई बुरा कहो या अच्छा, लक्ष्मी आवे या जावे।
लाखों वर्षों तक जीऊँ या, मृत्यु आज ही आ जावे ॥
अथवा कोई कैसा ही भय, या लालच देने आवे।
तो भी न्याय मार्ग से मेरा, कभी न पग डिगने पावे ॥

विषयों की आशा नहीं जिनको, साम्य भाव धन रखते हैं।
निज पर के हित साधन में जो निश दिन तत्पर रहते हैं ॥
स्वार्थ त्याग की कठिन तपस्या, बिना खेद जो करते हैं।
ऐसे ज्ञानी साधु जगत् के, दुःख समूह को हरते हैं ॥

होकर सुख में मग्न, न फूले, दुःख में कभी न घबरावे।
पर्वत, नदी, श्मशान भयानक, अटवी से नहीं भय खावे ॥
रहे अडोल अकंप निरंतर, यह मन दृढ़तर बन जावे।
इष्ट-वियोग, अनिष्ट-योग में, सहनशीलता दिखलावे ॥

गुणी जनों को देख हृदय में, मेरे प्रेम उमड़ आवे।
बने जहाँ तक उनकी सेवा, करके यह मन सुख पावे ॥
होऊँ नहीं कृतघ्न कभी मैं, द्रोह न मेरे उर आवे।
गुण ग्रहण का भाव रहे नित, दृष्टि न दोषों पर जावे ॥